

# अथर्ववेद

काण्ड २

सूक्त १५

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Atharvaveda

Kaanda 3

Sookta 15

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ईश्वर ने ब्रह्मा ऋषि के माध्यम से हमें सुख दुःख, लाभ हानि, जीवन मृत्यु के भय को छोड़ कर, हिंसा से दूर हो, सबके साथ सामजस्य के स्थापित कर धर्म के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है। हमारे चारों ओर ईश्वर द्वारा निर्मित, प्राकृतिक चक्र, काल चक्र, ग्रह नक्षत्रों की गति के नियम आदि हमें यह प्रेरणा देते हैं कि इस गतिशील ब्रह्माण्ड में कोई भी वस्तु या परिस्थिति स्थायी नहीं है। यह समझ कर हम मोह और भय से मुक्त हो जाते हैं।

प्रथम मन्त्र में पृथ्वी और अन्य ग्रह नक्षत्रादि की गति से सीखने का उपदेश है।

ब्रह्मा ऋषिः। प्राणो देवता। २४ अक्षराणि। त्रिपादार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः॥१॥

अथर्व २:३:१५:१

यथा। द्यौः। च। पृथिवी। च। न। बिभीतः। न। रिष्यतः॥ एव। मे। प्राण। मा। बिभेः॥१॥

(यथा) जैसे (पृथिवी) पृथ्वी (च) और (द्यौः) द्युलोक में अन्य ग्रह नक्षत्रादि (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और (न) बिना एक दूसरे को (रिष्यतः) चोट पहुँचाए अपनी अपनी गति से निरन्तर घूम रहे हैं (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है।

दूसरे मन्त्र में दिन और रात के चक्र से सीखने का उपदेश है।

ब्रह्मा ऋषिः। प्राणो देवता। २३ अक्षराणि। त्रिपात् निचृदार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

यथाऽहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः॥२॥

अथर्व २:३:१५:२

यथा। अहः। च। रात्री। च। न। बिभीतः। न। रिष्यतः॥ एव। मे। प्राण। मा। बिभेः॥२॥

(यथा) जैसे (अहः) दिन (च) और (रात्री) रात (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और (न) बिना एक दूसरे को (रिष्यतः) चोट पहुँचाए अपने समयानुसार आ जाते हैं (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है।

Synopsis

In this composition through sage Brahmaa, God has advised us to rise above the fear of the cycles of pleasures and sorrows, gain and loss, life and death and to be in harmony with everyone and everything around us; harmony evident through our benevolent thoughts and actions. God has created various cycles in this universe like the cycles of Mother Nature, the time cycle, orbits of Mother Earth and other planets etc. These cycles indicate that everything and every situation in this universe is subject to continuous change and nothing is permanent. Through this knowledge, we are advised to get rid of our attachments and fears.

In the first mantra the sage advises us to learn from the undeterred motion of earth and other celestial bodies.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praanah, **vowels** 24, **chhandah** tripaad aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**1. yathaa dyauṣcha pṛithivee cha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praanā maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:1

yathaa dyauḥ cha pṛithivee cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praanā maa bibheḥ.

(yathaa) **As the (pṛithivee) earth (cha) and other (dyauḥ) celestial bodies remain in harmony (cha) and (na bibheetah) undeterred follow their orbits (na) without (riṣhyataḥ) causing any harm, (eva) so should (me) my (praanā) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.**

In the second mantra the sage advises us to learn from the cycles of day and night.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praanah, **vowels** 23, **chhandah** tripaat nichṛid aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**2. yathaa'hashcha raatree cha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praanā maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:2

yathaa ahaḥ cha raatree cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praanā maa bibheḥ.

(yathaa) **As the (ahaḥ) day (cha) and the (raatree) night (na bibheetah) undeterred follow their cycle (cha) and cause (na) no (riṣhyataḥ) harm, (eva) so should (me) my (praanā) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.**

तीसरे मन्त्र में सूर्य और चन्द्रमा के उपकार से सीखने का उपदेश है।

ब्रह्मा ऋषिः । प्राणः देवता । २४ अक्षराणि । त्रिपादार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः ॥३॥ अथर्व २:३:१५:३

यथा। सूर्यः । च । चन्द्रः । च । न । बिभीतः । न । रिष्यतः ॥ एव । मे । प्राण । मा । बिभेः ॥३॥

(यथा) जैसे (सूर्यः) सूर्य (च) और (चन्द्रः) चन्द्रमा (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और (न) बिना एक दूसरे को (रिष्यतः) चोट पहुँचाए अपने समयानुसार प्रकट हो जाते हैं (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है ।

चौथे मन्त्र में ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्णों के समाजिक हित में मिलकर कार्य करने से सीखने का उपदेश है।

ब्रह्मा ऋषिः । प्राणः देवता । २४ अक्षराणि । त्रिपादार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः ॥४॥ अथर्व २:३:१५:४

यथा। ब्रह्म । च । क्षत्रम् । च । न । बिभीतः । न । रिष्यतः ॥ एव । मे । प्राण । मा । बिभेः ॥४॥

(यथा) जैसे (ब्रह्म) ब्राह्मण का ज्ञान (च) और (क्षत्रम्) क्षत्रिय का बल एक दूसरे के सहयोगी हो, (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और अकारण किसी को (रिष्यतः) चोट पहुँचाए (न) बिना, समाज का उत्थान करते हैं (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है ।

पाँचवे मन्त्र में ईश्वर और प्रकृति के सृष्टि के पालन में सहयोग से सीखने का उपदेश है ।

ब्रह्मा ऋषिः । प्राणः देवता । २४ अक्षराणि । त्रिपादार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः ॥५॥ अथर्व २:३:१५:५

यथा। सत्यम् । च । अनृतम् । च । न । बिभीतः । न । रिष्यतः ॥ एव । मे । प्राण । मा । बिभेः ॥५॥

(यथा) जैसे (सत्यम्) अविनाशी परमात्मा (च) और (अनृतम्) नश्वर प्रकृति एक दूसरे के सहयोगी हो, (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और (न) बिना (रिष्यतः) चोट पहुँचाए, ब्रह्माण्ड का पालन करते हैं (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है ।

In the third mantra the sage advises us to learn from the benevolence of the Sun and the Moon.

**riṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praanah, **vowels** 24, **chhandah** tripaad aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**3. yathaa sooryashcha chandrashcha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praanā maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:3

yathaa sooryah cha chandrah cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praanā maa bibheḥ.

*(yathaa) As the (sooryah) Sun (cha) and the (chandrah) Moon (na bibheetah) undeterred provide illumination to all (cha) and cause (na) no (riṣhyataḥ) harm, (eva) so should (me) my (praanā) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.*

In the fourth mantra the sage advises us to learn from the harmony between knowledge and strength.

**riṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praanah, **vowels** 24, **chhandah** tripaad aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**4. yathaa brahma cha kṣhatrañ cha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praanā maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:4

yathaa brahma cha kṣhatram cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praanā maa bibheḥ.

*(yathaa) As the (brahma) knowledge of the braahmaṇa (cha) and the (kṣhatram) strength of the kṣhatriya, (na bibheetah) undeterred act harmoniously for the upliftment of the society as a whole (cha) and cause (na) no (riṣhyataḥ) harm without a valid reason, (eva) so should (me) my (praanā) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.*

In the fifth mantra the sage advises us to learn from the harmony between God and Mother Nature.

**riṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praanah, **vowels** 24, **chhandah** tripaad aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**5. yathaa satyañ chaanṛitañ cha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praanā maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:5

yathaa satyam cha anṛitam cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praanā maa bibheḥ.

*(yathaa) As the (satyam) indestructible God (cha) and the (anṛitam) adjustable Mother Nature (na bibheetah) undeterred remain in harmony for the sustenance of the universe (cha) and cause (na) no (riṣhyataḥ) harm, (eva) so should (me) my (praanā) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.*

छठे मन्त्र में कालचक्र से सीखने का उपदेश है।

ब्रह्मा ऋषिः। प्राणः देवता। २४ अक्षराणि। त्रिपादार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

यथा<sup>१</sup> भूतं च भव्यं<sup>२</sup> च न बिभीतो न रिष्यतः<sup>३</sup>। एवा मे प्राण मा बिभेः॥६॥ अथर्व २:३:१५:६

यथा<sup>१</sup>। भूतम्। च। भव्यम्। च। न। बिभीतः। न। रिष्यतः॥ एव। मे। प्राण। मा। बिभेः॥६॥

(यथा) जैसे काल (भूतम्) भूत (च) और (भव्यम्) भविष्यत् के चक्र में, (न) बिना (बिभीतः) डरे (च) और (न) बिना (रिष्यतः) चोट पहुँचाए चलता रहता है, (एव) वैसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण तू भी (बिभेः) भय (मा) मत कर क्योंकि यह भय शरीरिक बल और मनोबल दोनों को ही हानि पहुँचाता है।

## Atharvaveda - Prapaathaka 3, Kaanda 2, Anuvaaka 3, Sookta 15

In the sixth mantra the sage advises us to learn from the cycles of the time.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** praaṇaḥ, **vowels** 24, **chhandah** tripaad aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhadjah.

**6. yathaa bhootañ cha bhavyañ cha na bibheeto na riṣhyataḥ,  
evaa me praaṇa maa bibheḥ.**

Atharva 2:3:15:6

yathaa bhootam cha bhavyam cha na bibheetah na riṣhyataḥ, eva me praaṇa maa bibheḥ.

(yathaa) **As the cycles of time i.e. (bhootam) past, present (cha) and (bhavyam) future continue (na bibheetah) undeterred (cha) and cause (na) no (riṣhyataḥ) harm, (eva) so should (me) my (praaṇa) mind, thoughts, character and dispositions be (maa) without any (bibheḥ) fear and undeterred from the righteous path.**